

# डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 6, जॉन 4

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 6 है यहूदिया से सामरिया तक, वापस गलील के काना तक, यूहन्ना 4:1-54।

नमस्ते, मैं डेविड टर्नर हूँ और जॉन पर यह हमारा छठा वीडियो है। हम वीडियो छह में जॉन अध्याय चार को देख रहे हैं और अध्याय के अंत में यीशु को कुएं पर महिला से मिलते हुए और आधिकारिक बेटे को ठीक करते हुए देख रहे हैं। तो, यह एक अध्याय है जिसे हम यहूदिया से सामरिया के माध्यम से गलील के काना तक बुला रहे हैं। यह एक तरह का यात्रा वृत्तांत है जिसमें बहुत सारी भौगोलिक हलचलें हैं।

हम शुरुआत करते हैं, यरूशलेम में यीशु के साथ और फिर वह चक्र पूरा करने के लिए फिर से उत्तर की ओर बढ़ते हैं। आपको याद होगा कि यूहन्ना अध्याय दो में यरूशलेम आने से पहले, उसने अपना पहला चमत्कार गलील के काना में किया था। और इसलिए, अध्याय चार के अंत में, हमें बताया गया कि उसने वहां अपना दूसरा चमत्कार किया है।

तो, हमारे पास जॉन दो से लेकर अध्याय चार के अंत तक के बीच एक चक्र या एक वृत्त खींचा हुआ है। तो, सबसे पहले, हमारा पैटर्न रहा है। हम कथा प्रवाह को देखेंगे और फिर कुछ विशेष विषयों के बारे में सोचेंगे जो इस अध्याय में हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।

जॉन अध्याय चार का कथा प्रवाह काफी दिलचस्प है। सबसे सरल अर्थ में, तीन चीजें घटित हो रही हैं। यीशु यहूदिया से सामरिया की ओर यात्रा कर रहे हैं और जैकब के कुएं पर रुक रहे हैं, यह कुआं परंपरागत रूप से जैकब को सौंपा गया है, यानी सूखार में, जो गेरिज़िम और एबाल पर्वत के पास, नब्लस के वर्तमान शहर के पास एक शहर है।

फिर अध्याय के मुख्य भाग में, मध्य भाग में, यीशु कुएं पर एक महिला से बातचीत कर रहे हैं और वह अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहे हैं। और यह शायद अध्याय का सबसे आकर्षक हिस्सा है क्योंकि, इस अध्याय में, जॉन कुशलता से एक कहानी बुन रहा है कि वह कैसे है, यीशु अपने शिष्यों को सिखा रहा है। वो जाते हैं।

वह महिला से मिलता है और उससे बातचीत करता है। जैसे ही उसकी बातचीत समाप्त होती है, शिष्य वापस आ जाते हैं। वह शिष्यों से बात करना शुरू करता है और जब वह उनसे बात कर रहा होता है, तभी महिला और उसके गांव के अन्य लोग वापस आ जाते हैं।

और इसलिए, चीजें बहुत दिलचस्प तरीके से आगे-पीछे हो रही हैं। कथानक एक प्रकार से मिश्रित हैं। अध्याय 43 से 54 तक का अंतिम भाग, जहां यीशु गलील के काना लौट रहे हैं, जहां उनकी मुलाकात एक अधिकारी से होती है, जो उनसे मिलने के लिए कफरनहूम से आया था

क्योंकि उसका बेटा गंभीर रूप से बीमार है और उसे यीशु की उपचार शक्ति की आवश्यकता है।

में, एक बार फिर, हम सुसमाचार में संकेतों और विश्वास के जटिल संबंध को देखते हैं। और इसलिए, जब हम अध्याय के अंत को देखते हैं तो हमारे पास उस पर थोड़ा विचार करने का कारण है। तो बस मानचित्र के साथ खुद को फिर से परिचित करने के लिए, यहां जो केंद्रीय चीज हो रही है वह सामरिया में हो रही है, यहूदिया और उत्तरी भाग, गलील के बीच का मध्य जिला।

तो, यीशु यरूशलेम से यात्रा कर रहे हैं और काना की ओर जा रहे हैं। इस प्रक्रिया में, वह जॉर्डन घाटी में आने और सामरिया को दरकिनार करने के बजाय सामरिया से होकर जा रहा है, जैसा कि कभी-कभी सामरी लोगों के साथ यहूदियों के संपर्क से बचने की प्रथा थी, जो अध्याय में एक मुद्दा बन जाता है जैसा कि हम देखेंगे। तो, मुख्य बात जो यहां काना में हो रही है और रईस कफरनहम से है, इसलिए वह यहां एक दिन की यात्रा करता है।

अपने बेटे को ठीक करवाने के बारे में देखने के लिए यीशु से मिलने के लिए काना तक पैदल चलना पड़ा होगा। तो, पूरी कहानी सामरियों के बारे में पृष्ठभूमि सामने लाती है और यह सामरी महिला कौन है, यहां क्या स्थिति चल रही है, और पाठ में कुछ सूक्ष्म बातें हैं कि यीशु को सामरिया से गुजरना पड़ा था। महिला यीशु से कहती है, आप एक यहूदी होकर, मुझ सामरी से कैसे बात कर रहे हैं, और जातीय अंतर शायद इस तथ्य से भी बढ़ गया है कि वह एक महिला है और वह एक पुरुष है, इसलिए यह काफी आश्चर्य की बात है उसका हिस्सा है कि वह उससे बात कर रहा है।

इसलिए, हमें बाइबिल के इतिहास में सामरी लोगों और यहूदियों और सामरी लोगों के वर्तमान सामाजिक इतिहास के बारे में कुछ समझना चाहिए। जैसा कि आप पहले से ही जानते होंगे, सामरिया एक क्षेत्र होने के साथ-साथ शहर भी था जिसे राजा ओमरी ने विभाजित राजशाही के दिनों के बाद उत्तरी राज्य की राजधानी के रूप में बनाया था जब चीजें अलग हो गई थीं। तो, हम इसके बारे में 1 किंग्स अध्याय 16 में पढ़ेंगे।

इस क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण चीजें हुईं। आपको याद होगा कि माउंट एबल और माउंट गेरिज़िम में जोशुआ के तहत एक वाचा नवीनीकरण समारोह हुआ था जहां इज़राइल के वाचा शाप और आशीर्वाद का एंटीफ़ोनल पाठ हुआ था। जोशुआ अध्याय 8. पुराने नियम के इतिहास में कुछ देर बाद हमें अश्शूरियों द्वारा उत्तरी साम्राज्य की हार और कई निवासियों के निर्वासन और क्षेत्र को फिर से बसाने के लिए अन्य स्थानों से नए निवासियों के आयात की जानकारी मिलती है, जो एक था स्पष्टतः यह प्रथा राजा के विरुद्ध विद्रोह को हतोत्साहित करने के लिए की गई थी।

तो, आपके पास यह मिश्रण है, यह एक पिघलने वाला बर्तन है, यदि आप चाहें, तो वहां उत्तर में राष्ट्रों का, और जो यहूदी लोग बचे थे, वे स्पष्ट रूप से इन अन्य लोगों के साथ अंतर्जातीय विवाह कर रहे थे, जिन्हें एक धार्मिक और जातीय मिश्रण या मिश्रण छोड़कर लाया गया था। अधिकांश धार्मिक यहूदी लोगों द्वारा, जो इसका हिस्सा नहीं थे, इसे एक अच्छी चीज़ के रूप में नहीं देखा गया। इसलिए बाद में जब हम फारसियों के अधीन भूमि पर लौटे, तो नहेमायाह 4 के बारे में पढ़ते

हुए, यहूदी पुनर्वासकर्ता सामरिया के लोगों के साथ घूमने की संभावना के बारे में बिल्कुल भी आशावादी नहीं थे क्योंकि उनका धर्म समन्वयवादी था। जाहिर तौर पर ऐसा हुआ कि जब विदेशियों को भूमि पर फिर से बसने के लिए ले जाया गया तो वे अपने देवताओं को अपने साथ ले आए, इसलिए वहां का धर्म यहोवा के पंथ और अन्य देवताओं के बचे हुए लोगों का एक संयोजन था जो विदेशियों द्वारा लाए गए थे जो पुनर्वास कर रहे थे। भूमि।

इसलिए, जब तक हम नए नियम तक पहुंचते हैं और सामरियों और यहूदियों के बारे में पढ़ना शुरू करते हैं, चीजें बिल्कुल भी अच्छी नहीं होती हैं। तो आप इसके बारे में पढ़ सकते हैं, विशेष रूप से उस संग्रह में जो ल्यूक ने हमारे लिए छोड़ा है, उसका सुसमाचार, साथ ही साथ उसकी प्रेरितों के काम की पुस्तक। उदाहरण के लिए, ल्यूक अध्याय 9 श्लोक 51 से 56 में, जैसे ही उसे स्वर्ग में ले जाए जाने का समय आया, यीशु ने दृढ़तापूर्वक यरूशलेम के लिए प्रस्थान किया।

आपमें से जिन लोगों ने ल्यूक का अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि ल्यूक में यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो तथाकथित ल्यूक और यात्रा कथा की ओर ले जाता है, जहां ल्यूक के आरंभ में ही यीशु पहले से ही यरूशलेम पर केंद्रित है। इसलिए, यीशु ने अपने दूतों को आगे भेजा जो उसके लिए सामान तैयार करने के लिए एक सामरी गांव में गए, लेकिन वहां के लोगों ने उनका स्वागत नहीं किया क्योंकि वह यरूशलेम की ओर जा रहे थे। इसलिए, शिष्य जानना चाहते थे कि क्या उन्हें इस बिंदु पर ओटी पैगम्बर की भूमिका निभानी चाहिए और उन पर आग लगा देनी चाहिए, और यीशु ने कहा, नहीं, इस बिंदु पर यह उचित नहीं है।

इसलिए, वे एक अलग गाँव में चले गए। तो, आप वहां यहूदियों और सामरियों के बीच सांस्कृतिक समस्याएं देख सकते हैं। हालाँकि, यदि आप सोच रहे थे कि यह एक बहुत बड़ा मुद्दा था, तो ल्यूक के अध्याय 10 के अगले अध्याय के विपरीत, हमारे पास अच्छे का दृष्टांत है और रिक्त स्थान भरें, है ना? वे फरीसी नहीं थे, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से अच्छे सामरी थे।

तो, मुझे लगता है, यीशु इस तरह के सांस्कृतिक पूर्वाग्रह को खत्म करने के लिए काम कर रहे हैं और यह इंगित कर रहे हैं कि कभी-कभी सामरी भी अच्छे लोग हो सकते हैं। और इसलिए, अच्छे सामरी के दृष्टांत में बहुत कुछ चल रहा है। आप ल्यूक के अध्याय 17 में थोड़ा आगे बढ़ें, जहां आपके पास यीशु द्वारा 10 कोढ़ियों को ठीक करने की कहानी है।

और निस्संदेह, केवल एक ही लौटता है, और बात बन जाती है, और वह एक सामरी था। हमारे पास ल्यूक 9 की कहानी लगभग उलट भी है, जहां सामरियों ने प्रेरितों के काम अध्याय 8 की पुस्तक में यीशु को शामिल होने से मना कर दिया था। इसलिए, हम उन दोनों चीजों को लगभग एक साथ रख सकते हैं। और मैंने ल्यूक, अधिनियमों की संरचनाओं को एक साथ देखा है जो ल्यूक अध्याय 9 में सामरी लोगों के साथ नकारात्मक स्थिति के बीच समानता को एक साथ जोड़ते हैं और जिस तरह से आत्मा में मसीह के माध्यम से भगवान का आंदोलन एक अर्थ में यहूदियों और यहूदियों को फिर से जोड़ता है। प्रेरितों के काम अध्याय 8 में सामरी लोग। आपको याद होगा कि प्रेरितों के काम 8 में, सामरी लोगों को पवित्र आत्मा के साथ थोड़ा अजीब अनुभव होता है।

वे मसीह की ओर मुड़ते हैं, और उनका मानना है कि उन्होंने बपतिस्मा ले लिया है, फिर भी वे अधिनियमों की पुस्तक में चल रहे किसी भी विशिष्ट लक्षण से इसे प्रकट नहीं करते हैं। इसलिए, यरूशलेम से प्रेरित आते हैं, उन पर हाथ रखते हैं, और उस समय, उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त होता है। यह एक अर्थ में, सामरिया में यहूदियों और यरूशलेम के साथ सामरिया में विश्वासियों का पुनर्मिलन या एकजुटता है, शायद उन्हें यह याद दिलाता है कि यीशु ने इस अध्याय में महिला से क्या कहा था, मुक्ति यहूदियों की है, फिर भी साथ ही साथ यहूदियों को यह दिखाना कि ईश्वर को अन्य राष्ट्रों में भी उतनी ही दिलचस्पी है जितनी उनमें है।

शायद उत्पत्ति अध्याय 12 का सिद्धांत यहाँ सामने आता है, कि ईश्वर इब्राहीम को चुनने में एक स्पष्ट रूप से विशेष कदम उठाता है, लेकिन ईश्वर की अंतिम इच्छा इब्राहीम के वंशजों के माध्यम से सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद देने की है। तो, शायद यहां कुछ बहुत गहन बाइबिल धर्मशास्त्र चल रहा है, जिसमें हम गहराई से जा सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं और इन चीजों को देख सकते हैं। हालाँकि, इससे यह वीडियो 45 मिनट के बजाय डेढ़ घंटे लंबा हो जाएगा, इसलिए बेहतर होगा कि हम इस बिंदु पर आगे बढ़ें।

तो, यहूदियों और सामरियों पर इस पृष्ठभूमि के साथ, हम यहां भूगोल का थोड़ा सा हिस्सा दिखाते हैं। यह उपग्रह मानचित्र उत्तर से दक्षिण तक, माउंट एबल और माउंट गेरिज़िम के बीच में आधुनिक शहर नब्लस को दिखाता है, आप एक व्यापक उपग्रह मानचित्र प्राप्त कर सकते हैं और शायद उस पर थोड़ा बेहतर परिप्रेक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। उत्तर की ओर देखने वाली ज़मीन पर, हम चित्र के केंद्र में स्पष्ट रूप से उस सामरी मंदिर के खंडहरों को देख रहे हैं जिसका महिला उल्लेख कर रही है।

इसके अलावा, हम इस साइट को देख सकते हैं जो आज भी ऐसी जगह है जहां पर्यटक लंबे समय से जा रहे हैं। मैं इसे जैकब वेल का पारंपरिक स्थल कहता हूँ। मैं इस बात को लेकर आश्चर्य नहीं हूँ कि यह बिल्कुल वहीं है जहां यह था, लेकिन यह कुछ समय पहले का है।

और इसलिए आप वहां देख सकते हैं कि लगभग 125 साल पहले समय के साथ इसका निर्माण किस तरह हुआ था, कुछ ऐसा दिखता है। मेरा मानना है कि 19-किशोरों के आसपास किसी समय, रूसी रूढ़िवादी लोग, साइट के चारों ओर एक चर्च का निर्माण कर रहे थे। हालाँकि, बोल्शेविक क्रांति ने शायद उन्हें छत मिलने से पहले ही रोक दिया।

और इसलिए, अब आपके पास यह बाड़ा है। मुझे मज़ाक करना अच्छा लगता है कि उनके पास वहां दो निगरानी रखने वाले कुत्ते थे और हर एक का अपना घर था। हालाँकि, यह नीचे से बाहर निकलने का एक प्रवेश द्वार है जहाँ आज कुआँ वास्तव में है।

इसलिए इस जगह पर एक लंबी परंपरा है। यह बात कितनी प्रामाणिक है कि जैकब को पानी कहाँ से मिला, इसका पता लगाना संभवतः असंभव है। लेकिन यह इस क्षेत्र में है, और इसलिए यह एक दिलचस्प और शायद प्रामाणिक स्थिति है।

तो वापस आख्यान पर, चीजों के साहित्यिक पक्ष पर वापस। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, जॉन अध्याय 4 में दो अलग-अलग कथानकों को एक साथ काफी कलात्मक ढंग से बुना गया है। जब वे आते हैं, तो शिष्य भोजन लेने के लिए चले जाते हैं। यीशु ने कुएं पर महिला के साथ बातचीत की और अंततः, शिष्य वापस लौट आये और यीशु ने उन्हें शिक्षा दी।

अध्याय 4, श्लोक 27 से 30 में एक संक्रमणकालीन अवधि है, जहां महिला के जाते ही शिष्य वापस आ रहे हैं। और मुझे लगता है कि यही वह अवधि है, जहां दोनों कथानक एक दूसरे को काटते हैं। और शायद यह इसका रेखाचित्र बनाने का एक अच्छा तरीका होगा।

मैंने अभी तक ऐसा करने का प्रयास करने के लिए समय या प्रयास नहीं किया है। इसलिए, जब यीशु उस स्त्री से बात कर रहे थे, तो शिष्य भोजन की तलाश में चले गए। और जब यीशु शिष्यों से बात कर रहे थे, वह महिला अपने साथी ग्रामीणों से बाहर आकर यीशु को देखने के लिए कह रही थी।

और यह सब बीत जाने के बाद, शिष्य शायद इस तथ्य से पूरी तरह से चकित हैं कि ये सभी सामरी लोग यीशु में विश्वास करने लगे हैं, इन सबके अंत में, शिष्यों को मूल रूप से यीशु द्वारा सिखाया जा रहा है कि खेत फसल के लिए तैयार हैं। और फिर लोग उसे देखने के लिए उमड़ने लगते हैं। तो, जो कुछ वह उन्हें बता रहा है, उसमें एक वस्तुगत सबक है, कि उन्हें शायद याद रखना चाहिए कि उसने निकोडेमस के साथ अपने साक्षात्कार में क्या कहा था, कि आप पवित्र आत्मा को प्रोग्राम नहीं कर सकते।

आत्मा जैसी इच्छा करती है, हवा की तरह चलती है। और आप नहीं जानते कि यह कहां जा रहा है या कहां आ रहा है। और कौन जानता था कि सामरी लोग, सभी लोगों में से, यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने के लिए इतने तैयार होंगे? तो यह गद्यांश के प्रवाह के साहित्यिक तरीके पर थोड़ा सा प्रभाव डालता है।

बस इसे सामग्री के दृष्टिकोण से देखने और वहां आने वाले मुद्दों के बारे में अधिक जानने के लिए। हमें बताया गया है कि यीशु को सामरिया से होकर गुजरना था। यह तथ्य कि उसे सामरिया से होकर गुजरना था, भूगोल के संदर्भ में बात की जाए तो यह बिल्कुल सच नहीं है, क्योंकि वह चारों ओर जा सकता था।

और अक्सर हमें बताया जाता है कि वे गलील और यहूदिया के बीच आने-जाने के लिए जॉर्डन घाटी से होकर जाते थे। इसलिए, हम जॉन में अन्य स्थानों पर ध्यान देते हैं जहां यीशु को यह करना चाहिए या वह करना चाहिए। और वहां अभिव्यक्ति आवश्यकता में से एक है।

तो जाहिर तौर पर यह भगवान ही थे जिन्होंने उनके लिए वहां नियुक्ति की थी। और यह मूलतः वही है जो जॉन को प्राप्त हो रहा है जब वह कहता है कि उसे सामरिया से होकर जाना था। तो, आप अन्य स्थान खोजें।

हमने उन्हें यहां सूचीबद्ध किया है। यदि आप उन्हें देखने और इसके बारे में सोचने के लिए समय निकालना चाहते हैं, जहां इसी अभिव्यक्ति का उपयोग यीशु द्वारा उन नियुक्तियों को पूरा करने

के लिए किया जाता है जो पिता ने उसके लिए निर्धारित की थीं। पिता के एजेंट के रूप में, उसने वह किया जो पिता को प्रसन्न करता था और पिता ने उसे जो काम करने के लिए दिया था उसे पूरा करने के लिए आत्मा के नेतृत्व में प्रेरित हुआ।

तो उनके लिए इस महिला से मिलना एक काम था. तथ्य यह है कि यीशु को स्पष्ट रूप से बाहर निकाला गया था, जैसा कि मेरे दादाजी ने कहा होगा, थके हुए, थके हुए और कुएं पर प्यासे थे, यह भी एक दिलचस्प स्थिति है क्योंकि हमें अक्सर बताया जाता है कि यीशु की मानवता वास्तव में सुसमाचार में स्पष्ट नहीं है जॉन का. यह यीशु की मानवता का एक बहुत ही स्पष्ट उदाहरण होगा जब तक कि आप यह न मानें कि यीशु यहाँ केवल अभिनय कर रहे थे और एक भूमिका निभा रहे थे, मैंने पहले भी लोगों को इस तरह की बातें कहते सुना है, लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत ही पागलपन है।

वह वास्तव में मनुष्य था, और वह वास्तव में अपनी यात्रा से थका हुआ और थका हुआ था, और वह प्यासा था और उसे वास्तव में पेय की आवश्यकता थी। इसलिए, जब वह महिला के साथ यह बातचीत करता है, जो एक बहुत ही आकर्षक बातचीत है, तो वास्तव में यहां छह अलग-अलग एपिसोड चल रहे हैं, अलग-अलग मुद्दों पर उसके साथ छह अलग-अलग बार आगे और पीछे। यह बहुत दिलचस्प है कि कैसे वह उसे बाहर खींचता है और उससे उन चीजों के बारे में बात करता है जिनके बारे में वह निश्चित नहीं है, और फिर वह मूल रूप से उसे यह समझने की ओर ले जा रहा है कि वह कौन है।

तो, हम बस एक क्षण ले सकते हैं और इसे देख सकते हैं, हालाँकि अगर हम बहुत अधिक समय लेंगे तो शायद हम मुश्किल में पड़ जायेंगे। जैसा कि हमारे यहां स्लाइड पर है, आप देख सकते हैं कि दो मुद्दे हैं। वह उससे जीवित जल के बारे में बात कर रहा है, और इससे उसका ध्यान आकर्षित होता है ताकि वह उससे बात कर सके कि सच्ची पूजा क्या है।

तो, यदि आप ध्यान दें, तो श्लोक 7 और 15 के बीच आदान-प्रदान आगे-पीछे हो रहा है। क्या आप मुझे पेय देंगे? उसने पद 7 में उससे पूछा। वह आश्चर्यचकित थी कि वह उससे पेय माँगीगा। पैरेन्टेटिकल नोट, कविता 9 में यहूदियों ने सामरियों के साथ संबंध नहीं बनाए। जाहिर है, यीशु के लिए उसके स्पर्श के साथ एक बर्तन लेना एक अनुष्ठानिक अशुद्धता की स्थिति होगी, इसलिए ईमानदार यहूदियों को इससे कोई लेना-देना नहीं होगा। .

तो, यीशु ने उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का वरदान जानती, और वह कौन है, जो तुझ से पेय मांगता, तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता। दूसरे शब्दों में, मुझे आपसे नहीं पूछना चाहिए, बल्कि आपको मुझसे पूछना चाहिए। इस दौरान उन्होंने कुछ बेहद दिलचस्प सवाल पूछे.

क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है? ठीक है, हाँ, लेकिन वह धीरे-धीरे इसका पता लगा रही है। यीशु कहते हैं, जो कोई इस जल को पीएगा, वह फिर प्यासा होगा। परन्तु मेरे पास जल है जो अनन्त जीवन के लिये भर जाएगा।

तो, महिला सोचती है, ठीक है, मैं इसका उपयोग कर सकती हूँ, फिर मुझे पानी लेने के लिए अपने जग के साथ यहां नीचे नहीं आना पड़ेगा। कुछ लोग इस बात को मुद्दा बनाते हैं कि वह पानी लेने के लिए दिन के बीच में यहां आती है, जाहिर तौर पर यह सोचकर कि वह है, ज्यादातर लोगों को सुबह और शाम को पानी मिलता होगा, माना जाता है। इसलिए उसका यहां केवल दोपहर के समय आना यह दर्शाता है कि वह अन्य लोगों के आसपास नहीं रहना चाहती क्योंकि वह नैतिक रूप से बहिष्कृत है क्योंकि उसके चार पति हैं।

प्रोफेसर लिन कोएक ने एक दिलचस्प किताब लिखी है जो उस मुद्दे और नए नियम के समय में महिलाओं के बारे में बात करती है। और वह इंगित करती है कि शायद हमने इस अध्याय में इस महिला की यौन पेकाडिलोज़ के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है। शायद उसके ऐसे पति थे जिन्होंने उसे तलाक दे दिया था, जो मर चुके थे, और शायद इसीलिए उसके जीवन में कई अलग-अलग साथी थे।

किसी भी घटना में, जब यीशु उससे बात करता है और उसके व्यक्तित्व और उसके जीवन के बारे में अंतर्दृष्टि दिखाता है, तो वह उससे कहती है, मैं देख सकती हूँ कि तुम एक भविष्यवक्ता हो। मैं भी एक धार्मिक व्यक्ति हूँ। हमारे पूर्वज इसी पर्वत पर पूजा करते थे।

श्लोक 19, आप यहूदियों का दावा है कि यह वह स्थान है जहां आपको यरूशलेम के रूप में भगवान की पूजा करनी चाहिए। यहीं पर यीशु ने उसे उस तरह से पढ़ाना शुरू किया जो उसने अध्याय दो में कहा था, कि वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बोल रहा था, कि वह नया स्थान है, नया स्थान जहां भगवान की उपस्थिति प्रकट होती है धरती। तो, यीशु ने स्त्री को उत्तर दिया, मेरा विश्वास करो, एक समय आ रहा है जब तुम न तो इस पहाड़ पर और न ही यरूशलेम में पिता की आराधना करोगे।

तुम सामरी लोग उस चीज़ की पूजा करते हो जो तुम नहीं जानते। हम यहूदी जो जानते हैं उसकी पूजा करते हैं। मुक्ति यहूदियों से है।

तो, यहाँ कुछ विशेष क्षण चल रहा है। फिर भी यीशु कहते हैं कि वह समय आ रहा है और अब भी आ गया है जब सच्चे उपासक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता इसी प्रकार के उपासकों को चाहता है। महिला कहती है, ठीक है, मैंने किसी दिन मसीहा के आने के बारे में सुना है और वह सब कुछ ठीक कर देगा और हमें सब कुछ समझा देगा।

उस समय, यीशु कहते हैं, मैं वह आदमी हूँ। मुझे आश्चर्य है कि जब उसने ऐसा कहा तो उसे कैसा लगा। खैर, पाठ हमें इस पर विचार करने की अनुमति नहीं देता है क्योंकि उस समय, शिष्य वापस आते हैं और महिला चली जाती है, जो थोड़ा अजीब लगता है कि आप सोचेंगे कि हमें और अधिक मिलेगा।

इसलिए, हमें यहां निलंबित नहीं किया गया है, वास्तव में यह नहीं पता कि उसने इसके बारे में क्या सोचा था, लेकिन हम थोड़ा बाद में पता लगाएंगे। इस बीच, यीशु शिष्यों से बात कर रहे हैं। और इसलिए जब वह श्लोक 31 से 38 में उनसे उन अवसरों के बारे में बात करता है जो उनके लिए उपलब्ध हैं और न केवल भोजन खाने में व्यस्त रहने की आवश्यकता है, बल्कि आत्माओं को

इकट्ठा करने में भी व्यस्त रहना चाहिए जिन्हें भगवान यीशु और उनके संदेश के लिए तैयार कर रहे हैं।

जैसे ही वह उनसे इस बारे में बात कर रहा था, महिला अपने गांव में वापस आ गई, श्लोक 26, 28, वगैरह, अपने साथी ग्रामीणों से कह रही थी कि उन्हें यीशु को देखने और उसके बारे में जानने की जरूरत है। इसलिए जैसे ही यीशु ने शिष्यों से बात करना समाप्त किया, श्लोक 30, ग्रामीण शहर से बाहर आ रहे थे, और उनकी ओर बढ़ रहे थे। और अंततः, हमें बताया गया कि कहानी पद 39 में समाप्त होती है, उस शहर के कई सामरी लोगों ने महिला की गवाही के कारण यीशु पर विश्वास किया।

उसने मुझे वह सब कुछ बताया जो मैंने कभी किया। एक बार जब वे बाहर आते हैं और यीशु को सुनते हैं और वह उन्हें सिखाता है, तो वे कहते हैं, अब हम उस पर विश्वास करते हैं, केवल आपके कहे के कारण नहीं। अब हमने स्वयं सुना है कि अध्याय का यह भाग श्लोक 42 में समाप्त होता है।

तो, यह एक अद्भुत अध्याय है और मुझे लगता है कि यह काफी हद तक साहित्यिक जांच को सहन कर सकता है। यह देखना दिलचस्प होगा कि एक कुशल वीडियोग्राफर या नाटककार इस पर आधारित एक नाटक कैसे लिखेगा, जिसमें एक दृश्य दूसरे दृश्य में लुप्त हो जाएगा, शायद एक मुख्य दृश्य, और मंच के किनारे पर, अन्य बातचीत चल रही होगी। यह देखना दिलचस्प है कि इन तरीकों में कुशल किसी व्यक्ति द्वारा इसे कैसे चित्रित किया जा सकता है।

तो, यह कितनी अद्भुत कहानी है कि वह महिला आत्मा के नेतृत्व में है, वह यीशु को जो कहना है उसके प्रति खुली है, और उसकी इतनी जल्दी गवाही के कारण, उसके साथी ग्रामीण यह सुनने में रुचि रखते हैं कि यीशु क्या कहना चाहते हैं। उनमें से बहुत से लोग विश्वासी बन जाते हैं और यीशु कुछ समय के लिए उनके साथ रहते हैं और फिर काना की ओर लौटते हैं, जहाँ से वह हमेशा जा रहे थे। इस महिला के खुलेपन के बारे में दिलचस्प बात यह है कि इस महिला की तुलना पिछले अध्याय में यहूदी पुरुष निकोडेमस के साथ हुई घटना से की गई है।

तो जाहिर तौर पर हमारे यहां कुछ लिंग और कुछ जातीय चीजें चल रही हैं। यहूदी पुरुष बनाम सामरी महिला। आप कह सकते हैं, मुझे लगता है कि यहूदी व्यक्ति सावधानी से यीशु के प्रति खुला है।

सामरी महिला यीशु के प्रति पूरी तरह से खुली है और उनकी अनुयायी बन जाती है और अपने कई साथी ग्रामीणों को यीशु के पास ले जाती है। हम कुछ अन्य तुलनाएँ और विरोधाभास कर सकते हैं। अक्सर, आप लोगों को नैतिक रूप से ईमानदार यहूदी निकोडेमस की तुलना सामरी महिला से करते हुए देखेंगे, जिसे आम तौर पर एक अनैतिक महिला के रूप में जाना जाता है, जिसके जीवन में कई साथी थे।

जैसा कि प्रोफेसर लिन कोहिक ने अपनी पुस्तक में प्रदर्शित किया है, यह शायद पाठ में बहुत अधिक है और यह भी हो सकता है कि उस विशेष संस्कृति में अनैतिकता या बेवफाई के अलावा अन्य कारणों से उसके कई पति थे। इसलिए, हम शायद इस मामले को बहुत ज़्यादा तूल दे रहे



हैं। शायद उसकी स्थिति की तुलना उस विवादास्पद अनुच्छेद से करना थोड़ा दिलचस्प है जिसके बारे में हमने अपने दूसरे परिचयात्मक व्याख्यान, वीडियो दो में अध्याय आठ में व्यभिचार में ली गई महिला के बारे में बात की थी और कैसे यीशु उससे कहते हैं, वे लोग कहां गए जो हैं आपकी निंदा कर रहे हैं? खैर, वे चले गये।

ठीक है, यीशु कहते हैं, जाओ लेकिन अब और पाप मत करो। इसलिए भले ही हमें लगता है कि पाठ इंगित करता है कि यह एक अनैतिक महिला है, तो शायद हम उसकी तुलना अब जॉन 8 पद 11 में पाई जाने वाली संभावित ऐतिहासिक परंपरा से करेंगे, जो उन महिलाओं के साथ यीशु के संबंधों के बारे में है जिनके पास नैतिक मुद्दे थे। उस बहस के बिंदु से आगे बढ़ते हुए अन्य मामलों की ओर जो बिल्कुल स्पष्ट हैं, निकोडेमस एक उच्च श्रेणी का व्यक्ति था।

यीशु कहते हैं, वह इस्राएल के प्रमुख शिक्षकों में से एक था। एक सामरी महिला शायद सामाजिक सीढ़ी पर बहुत नीचे थी। वह ईश्वर के प्रति अपेक्षाकृत अनभिज्ञ थी।

माना जाता है कि निकुदेमुस ने ईश्वर को समझ लिया था और वह सभी फरीसी परंपरा में था। हालाँकि, यीशु इस बात से आश्चर्यचकित हैं कि उनकी हैसियत का एक व्यक्ति यह नहीं समझ पा रहा है कि वह उन्हें दोबारा जन्म लेने के बारे में क्या बता रहे हैं। सभी लोगों के अनुमान के अनुसार, निकुदेमुस एक रूढ़िवादी व्यक्ति था, एक ऐसा व्यक्ति जो धार्मिक रूप से शुद्ध था।

सामरी महिला के पास यहूदी दृष्टिकोण से कुछ विधर्मी विचार थे, जो पुराने नियम के समय के समन्वयवाद पर वापस जाते हैं। निकुदेमुस एक प्रभावशाली व्यक्ति था। यह महिला स्पष्ट रूप से अपनी संस्कृति में कुछ हद तक हाशिये पर थी, लेकिन मूल बात यह है कि उन दोनों को यीशु की आवश्यकता थी।

तो, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सामरी महिला को अपनी आवश्यकता के बारे में पता था और वह अपने कई साथी ग्रामीणों के साथ यीशु में विश्वास करने लगी थी। निकोडेमस आश्चर्यचकित रह गया कि उसके साथ क्या हुआ, हालाँकि जब वह अध्याय 7 और अध्याय 11 में कथा में फिर से प्रकट होता है। जब हम इस अध्याय को देखते हैं तो हमें आश्चर्य होता है कि क्या यह हमें अध्याय 10 में यीशु को अच्छे चरवाहे के रूप में सुनने के लिए तैयार कर रहा है, जो कहता है, मेरी ऐसी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं, और मैं उन्हें भी ले आऊंगा, कि वे एक ही भेड़शाला और एक ही चरवाहा हो जाएं।

तो, यहाँ समरिता में यीशु का आंदोलन यह दिखाने के लिए आगे बढ़ता हुआ प्रतीत होता है कि ईश्वर चाहता है कि यहूदी लोग जो यीशु में विश्वास करते हैं, वे सभी राष्ट्रों तक पहुँचें, और बाइबिल धर्मशास्त्र के संदर्भ में, उत्पत्ति तक पहुँचें। अध्याय 12 इस तथ्य पर कि ईश्वर इब्राहीम के माध्यम से राष्ट्रों तक पहुंचना चाहता है। जोहानिन धर्मशास्त्र के संदर्भ में, शायद यह हमें प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 तक ले जाता है, जहां हम सभी राष्ट्रों और जनजातियों और भाषाओं के लोगों को एक साथ एकजुट होकर सिंहासन पर बैठे व्यक्ति और मेमने की प्रशंसा करते हुए देखते हैं। अध्याय में थोड़ा आगे देखने पर, हम इस महिला से क्या सीखते हैं? आज हमारे अपने पूर्वाग्रहों में समकालीन अनुप्रयोग के बारे में सोचते हुए, शिष्य आश्चर्यचकित थे कि यीशु इस सामरी महिला

के साथ बात कर रहे थे, शायद उसके जातीय अंतर के कारण अधिक क्योंकि वह सिर्फ एक महिला के साथ बात कर रहे थे।

लेकिन हम कहना चाहेंगे, है ना, कि नस्लीय और सांस्कृतिक पूर्वाग्रह यीशु का अनुसरण करने के साथ असंगत है, कि हममें से जो लोग यीशु का अनुसरण करते हैं उन्हें यह कहने के लिए पर्याप्त ईमानदार होना होगा कि हमारी जातीयता जो भी हो, हम आम तौर पर संस्कृतियों में संदेह के साथ आते हैं उन लोगों के प्रति जो हमसे भिन्न हैं। हम आज बहुत से लोगों को एक-दूसरे के बारे में बात करते हुए सुनते हैं। खैर, यीशु के सुसमाचार को दुनिया तक पहुंचाने और उसके लिए गवाही देने के मामले में, वास्तव में कोई दूसरा नहीं है।

सुसमाचार हर किसी के लिए है, और यह सोचना हमारे ऊपर नहीं है कि कुछ लोग दूसरों की तुलना में इसके प्रति अधिक संवेदनशील हैं या सभी मनुष्यों के लिए सुसमाचार की उपयुक्तता पर संदेह करते हैं। इसलिए, यीशु कई मायनों में एक सामान्य यहूदी पुरुष के लिए यहां जो करना आरामदायक होगा उससे एक कदम आगे बढ़ रहा था। वह जोखिम ले रहा था, और मुझे आश्चर्य है कि क्या भगवान हममें से किसी को भी उसी तरह जोखिम लेने के लिए प्रेरित कर रहा है जिस तरह हम उन लोगों से संबंधित हैं जो हमसे अलग हैं।

ईश्वर एक ईश्वर है जिसने सभी मनुष्यों को अपनी छवि में बनाया है, और यदि हम जॉन अध्याय एक में सही हैं, तो हमारे पास संकेत हैं कि यीशु जिस तरह से दुनिया में प्रकाश लाता है, उससे सृष्टि का नवीनीकरण कर रहा है। जैसे भगवान ने प्रकाश बोला, यीशु नया ला रहे हैं, प्रकाश पैदा कर रहे हैं, और सभी मनुष्यों के लिए भगवान का संदेश ला रहे हैं। और ईश्वर मसीह में एक नई मानवता का निर्माण करना चाहते हैं।

हम यहां कुछ पॉलिन धर्मशास्त्र ला सकते हैं और इस तथ्य के बारे में सोच सकते हैं कि ईसा मसीह में लिंग और जातीयता, सांस्कृतिक स्थिति, सामाजिक सीढ़ी और उसके सभी उतार-चढ़ाव हैं। मसीह में, इनमें से कोई भी वास्तव में मायने नहीं रखता। मसीह में, सुसमाचार सभी जातियों के लोगों और सामाजिक सीढ़ी पर सभी स्थानों के लिए है, और यही हमें हमारी अंतिम पहचान देता है।

जब बात ठीक नीचे आती है तो ये सभी अन्य चीजें आकस्मिक हो जाती हैं। सुसमाचार सभी के लिए है, और उम्मीद है, हम यीशु की नकल करेंगे और इसे हर किसी तक ले जाने के लिए तैयार होंगे, चाहे हमारा अतीत उनकी संस्कृतियों के साथ कुछ भी रहा हो। तो, अध्याय एक छोटे खंड के साथ समाप्त होता है।

हमने उस खंड का उल्लेख किया है जो अध्याय चार, श्लोक 43 से 54 में गलील के काना के शाही अधिकारी से संबंधित है। यह कहानी अपेक्षाकृत सरल और स्पष्ट है। शायद इसके बारे में अधिक दिलचस्प बात यह है कि कैसे अधिकारी कफरनहूम से यीशु के पास आता है और अपने बेटे को ठीक करने के लिए तत्काल काना में उसकी तलाश कर रहा है।

इसलिए, यदि आप यहां कथा को देखना शुरू करते हैं, तो पद 43 में सामरियों के साथ दो दिन रहने के बाद, वह गलील, कोष्ठक, एक भविष्यवक्ता के लिए रवाना हो गए। यीशु ने बताया था कि

एक भविष्यवक्ता का अपने ही देश में कोई सम्मान नहीं है। यह हममें से उन लोगों के लिए थोड़ा अजीब लगता है जो पर्यायवाची परंपरा से परिचित हैं, जहां इस अभिव्यक्ति का उपयोग यह वर्णन करने के लिए किया जाता है कि यीशु को वास्तव में उनके गृहनगर नाज़रेथ द्वारा सम्मानित नहीं किया गया था।

तो, जब आप इसे यहां पढ़ते हैं, तो आप सोचने लगते हैं कि इसमें क्या मामला है? वह इसे यहां क्यों इंगित करेगा? यीशु कह रहे हैं कि एक भविष्यवक्ता का अपने ही देश में, या अपने ही गृहनगर में कोई सम्मान नहीं है। तो, मुझे लगता है, सवाल यह होगा कि यहां किस गृहनगर, किस देश की बात हो रही है? कौन सा गृहनगर वास्तव में यीशु का सम्मान नहीं कर रहा था? नाज़रेथ यहाँ चित्र में नहीं है। यीशु गलील के काना में थे, जहाँ उन्होंने चमत्कार किया और उनके शिष्यों ने उन पर विश्वास किया।

वहां कोई स्पष्ट घर्षण नहीं था जिसके बारे में हम जानते हैं। तो, जाहिरा तौर पर, जॉन 444 में इस कहावत का सिनाॉटिक परंपरा की तुलना में एक अलग संदर्भ है। जाहिर तौर पर, यह उस तरीके को संदर्भित करता है जिस तरह से यरूशलेम में यीशु के साथ कुछ हद तक मिश्रित तरीके से व्यवहार किया गया था जब उन्होंने मंदिर को साफ किया था और मंदिर के अधिकारियों ने उनसे पूछा था कि इन चीजों को करने के लिए उनके पास क्या अधिकार है।

बहुत से लोग जो उस पर विश्वास करते थे, लेकिन शायद वास्तविक रूप से नहीं, और यीशु ने खुद को उनसे अलग रखा, खुद को उनके प्रति समर्पित नहीं किया। निकोडेमस ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो एक तरह से यीशु के प्रति आकर्षित था, लेकिन वास्तव में यह नहीं समझ पाया कि वह वास्तव में कौन था। शायद 444 का यह कथन यरूशलेम में यीशु के मिश्रित स्वागत से संबंधित है।

इसलिए, जब वह गलील में पहुंचता है और वहां के शाही अधिकारी से मिलता है, और इस बात से निराश होता है कि केवल संकेतों और चमत्कारों से ही लोग विश्वास में आते हैं, श्लोक 48 यही कहता है, जब तक आप लोग संकेत और चमत्कार नहीं देखेंगे, तब तक आप कभी विश्वास नहीं कर पाएंगे। विश्वास। शायद यह वह निराशा है जो यीशु को यरूशलेम में पहले ही महसूस हो चुकी है, कि वहां उसका उचित स्वागत नहीं किया गया है। जैसा कि आपको याद होगा, यरूशलेम में मुद्दा शायद संकेतों की गलतफहमी थी, संकेतों को देखना, लेकिन वास्तव में यह नहीं देखना कि उन्होंने किसकी ओर इशारा किया था।

शायद यह बात अभी भी उसके दिमाग में है। जब हम उस रईस व्यक्ति और यीशु के लिए उसके अनुरोध के बारे में यह कहानी पढ़ते हैं, तो यह थोड़ा कठोर या अचानक लगता है कि यीशु ने पद 48 में ही उत्तर दिया जैसा वह करता है। वह आदमी यीशु के पास आता है और उससे विनती करता है कि वह आकर उसके बेटे को ठीक कर दे जो मौत के करीब था, जैसा कि श्लोक 47 में कहा गया है।

यीशु ने यह कहकर उत्तर दिया कि जब तक तुम लोग संकेत और चमत्कार नहीं देखोगे, तुम कभी विश्वास नहीं करोगे। आप एक तरह से कहते हैं, वाह, यीशु का वहां बहुत बुरा दिन था, यह

उस आदमी के लिए कुछ हद तक अतिरंजित प्रतिक्रिया प्रतीत होती है। तो, वह आदमी निडर है, श्लोक 49, वह कहता है, श्रीमान, मेरे बच्चे के मरने से पहले नीचे आ जाओ।

इसलिए, उसे एक तत्काल आवश्यकता है और वह चाहता है कि चीजों का ध्यान रखा जाए। वह यीशु की कठोर प्रतीत होने वाली प्रतिक्रिया से परेशान नहीं है। यीशु श्लोक 50 में उत्तर देते हैं, अपने रास्ते जाओ, तुम्हारा पुत्र जीवित रहेगा।

उस व्यक्ति ने यीशु को अपने वचन पर ले लिया। खैर, उस आदमी को जितना उसने माँगा था उससे कहीं अधिक मिला क्योंकि उसने यीशु से शीघ्र कफरनहूम वापस आने के लिए कहा ताकि उसका बेटा ठीक हो सके। यीशु ने लड़के को दूर से ही ठीक कर दिया और उसे कफरनहूम जाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी।

अतः उस व्यक्ति ने यीशु की बात मान ली और रास्ते में ही चल दिया। उसके सेवक उससे मिले और उन्होंने उसे बताया कि उसका लड़का जीवित है। इसलिए, उसे पता लगाने के लिए घर तक जाने की भी ज़रूरत नहीं थी।

वह उनसे पूछना चाहता था कि वह किस समय ठीक हुआ और उन्होंने निश्चय किया कि दोपहर में उसका बुखार उतर गया। पिता को एहसास हुआ कि यह वही समय था जब यीशु ने उससे कहा था, तुम्हारा बेटा जीवित रहेगा। इसलिए, जब वह कहानी ज्ञात हुई, तो न केवल अधिकारी, बल्कि उसके पूरे परिवार ने इस पर विश्वास किया।

इसलिए, जैसा कि हम श्लोक 54 में परिच्छेद को समाप्त होते हुए देखते हैं, यह यीशु द्वारा प्रदर्शित दूसरा संकेत है। निःसंदेह, यह उसके द्वारा प्रदर्शित सभी चिन्हों में से दूसरा चिन्ह नहीं था। उसने यरूशलेम में कई चिन्ह दिखाए थे, लेकिन यह हमें अध्याय 2 से गलील के काना की ओर ले जा रहा है, जिसमें कहा गया है कि यहूदिया से गलील वापस आने के बाद यीशु ने यह दूसरा चिन्ह दिखाया था।

तो, दूसरा संकेत लूपर चक्र को अध्याय 2 और श्लोक 11 तक पूरा करता है। इसलिए, जैसे ही हम इस वीडियो के निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, हमें फिर से संकेतों और विश्वास के बीच के संबंध पर विचार करना पड़ता है। हमने इसे अब तक कई बार देखा है और जॉन, मेरे लिए यह एक सतत व्याख्यात्मक प्रश्न है और मुझे नहीं पता कि इस पर मेरी पूरी पकड़ है, लेकिन मैं इस पर काम कर रहा हूँ।

इसलिए, मैं आपसे इस प्रश्न पर क्रेग कोएस्टर के दृष्टिकोण के बारे में सोचने के लिए कहता हूँ, जिनके पास जॉन के गॉस्पेल पर कुछ बहुत अच्छे काम हैं, जो बहुत ही सरलता से लिखे गए हैं, लेकिन उत्कृष्ट सामग्री रखते हैं और पढ़ने लायक हैं। उनकी एक किताब का नाम द वर्ड ऑफ लाइफ है, जो जॉन के बाइबिल धर्मशास्त्र की तरह है। यहाँ केस्टर संकेतों और विश्वास के बारे में क्या कहता है।

सुसमाचार के पात्र सच्चे विश्वास के साथ संकेतों का जवाब देते हैं यदि वे पहले से ही यीशु से या उसके बारे में सुनी गई बातों से विश्वास में आ चुके हैं। तो, केस्टर जो कह रहा है वह यह है कि

संकेत वास्तव में लोगों के साथ काम करते हैं यदि उन्होंने पहले ही सुन लिया है कि यीशु ने क्या कहा है। इसलिए, यदि आप सुनते हैं कि यीशु क्या कहते हैं, उनका संदेश, और आप उस पर विश्वास करते हैं तो आप उन संकेतों को ठीक से समझने में सक्षम हैं जो वह करते हैं।

केस्टर आगे कहते हैं कि शिष्यत्व का मार्ग तब शुरू होता है जब लोगों को अनुसरण करने के लिए बुलाया जाता है जब वे कुछ ऐसा सुनते हैं जो उन्हें यीशु पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करता है। विश्वास एक परिप्रेक्ष्य बनाता है जिससे लोग विश्वास के लिए सहायक तरीके से संकेतों को देख सकते हैं। उनके लिए, संकेत किसी रिश्ते की शुरुआत नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो मौजूदा रिश्ते में घटित होता है।

तो, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं, एक तरह से, केस्टर हमें यहां कुछ बता रहा है जिसे हम प्रोटेस्टेंट अपने दिल और हमारे धार्मिक दृष्टिकोण से प्रिय मानते हैं, और वह सोला स्क्रिप्टुरा की धारणा होगी। दूसरे शब्दों में, केस्टर कह रहा है कि यदि हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर जो अन्य कार्य करता है वह ठीक से समझ में आ जाएगा। मैं यहां यह कहने के लिए लगभग प्रलोभित हूँ कि वह संस्कार के स्थान पर शब्द को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि यीशु के संकेतों को संस्कार के रूप में उचित रूप से प्रस्तुत किया जाएगा या नहीं।

किसी भी घटना में, क्या केस्टर जो कह रहा है वह सच है? मैं चाहता हूँ कि ऐसा हो, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि ऐसा होगा। मुझे पसंद है कि वह क्या कह रहा है, कि जोर यीशु के संदेश पर है और जो चीजें यीशु करता है वह यीशु ने पहले ही जो कहा है उसकी प्रामाणिकता या बैकअप या पुष्टि को लागू करने के लिए है। मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यह उन उदाहरणों से पूरी तरह साबित हो सकता है जिनके बारे में यीशु यहां संकेतों के बारे में बात करते हैं, लेकिन मैं इसे आपके ध्यान में लाता हूँ ताकि आप इस पर विचार कर सकें जब आप जॉन के बाकी सुसमाचार और उन चीजों पर विचार करते हैं जो हम करते हैं हम अध्यायों के माध्यम से पुस्तक के अंत तक काम करते हुए निपटेंगे, और मुझे आश्चर्य है कि क्या केस्टर जो कह रहा है वह वही है जो यीशु स्वयं अध्याय 20 में कह रहे थे, जहां पुस्तक पीटर के बारे में उपसंहार से पहले समाप्त होती है।

थॉमस और थॉमस के संदेह और उसके विश्वास में आने से निपटने में, यीशु अध्याय 20 के पद 29 में कहते हैं, क्योंकि तुमने मुझे देखा है, क्या तुमने विश्वास किया है? धन्य हैं वे, जिन्होंने देखा और विश्वास नहीं किया, और फिर यीशु ने अपने चेहों के साम्हने और भी बहुत से चिन्ह दिखाए। तो, यह लगभग वैसा ही है जैसे उसका खुद को थॉमस को दिखाना यहाँ एक संकेत है, और थॉमस ने कुछ देखा है, यदि आप चाहें तो एक संकेत, और विश्वास किया है, इसलिए यीशु कहते हैं कि आपने विश्वास किया है क्योंकि आपने संकेत देखा है, जाहिरा तौर पर, जो वास्तव में नहीं है केस्टर यहां जिस रिश्ते का सुझाव दे रहा है, उसमें फिट बैठें। इसलिए मैं यह सब कोएस्टर के तर्क को ध्वस्त करने की कोशिश करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, बल्कि आपको यह बताने के लिए कह रहा हूँ कि यह एक जटिल प्रश्न है, और जैसा कि आप समग्र रूप से जॉन के सुसमाचार के बारे में सोचते हैं, यह एक आवर्ती मुद्दा है जिसके बारे में आपको सोचना होगा इसके बारे में, और मुझे इस बात में अधिक दिलचस्पी है कि आप इसके निष्कर्ष के बारे में सोचें और आप इससे कैसे निपटेंगे, बजाय इसके कि मैं आपको इस बात के लिए प्रेरित करूँ कि मैं इस बारे में क्या सोचता हूँ।

इसके लिए मुझे यह जानना होगा कि मैं इसके बारे में वास्तव में क्या सोचता हूं, जो इस समय मैं नहीं जानता। आज यहां जॉन 4 पर ध्यान देने के लिए धन्यवाद। हम अगली बार जॉन 5 के लिए आपसे मिलेंगे।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 6 है यहूदिया से सामरिया तक, वापस गलील के काना तक, यूहन्ना 4:1-54।